Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

हिन्दी दलित कविताः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

दीपिका साहनी[1]

हिन्दी दलित कविता पर टिप्पणी करते हुए दुर्गाप्रसाद गुप्त कहते हैं कि ''हिन्दू वर्ण–व्यवस्था से पीड़ित समुदाय की वेदना ही हिन्दी दलित कविता का स्वर है, जिसका तेवर, कविता का आन्दोलन चेतना के स्तर पर बहुत गहराई से जुड़ा है, जिसकी जड़ में सदियों का अन्याय, अत्याचार और शोषण का इतिहास हैं। इसलिए हिन्दी की दलित कविता समय के दौर में दलित आन्दोलन को स्थायित्व प्रदान करने वाली कविता है। यह वर्णव्यवस्था की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक वर्चस्व के खिलाफ प्रतिरोधात्मकता का अपना नया मोर्चा निर्मित करती है। यह सदियों की यातना है जो आक्रोश एवं विद्रोह के रूप में फूट रही है ..... दलित कविता अपनी यातनाओं के अतीत के साथ अपने समसामयिक जीवन और परिवेश के साथ गहराई से जुड़ी हुई है ,जिससे उसकी प्रासंगिकता बनी हुई है। आए दिन दलितों पर होने वाले अत्याचारों को वह बखूबी दर्ज करती है।''[1]

दलित कविता क्या है? के प्रश्न का उत्तर हर बार यह मिलता रहा है कि दलित कविता शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित व अपमानित दलित जन साधारण की आवाज है। सम्पूर्ण दलित कविताओं का यदि अध्ययन करें तो हमें दिखता है कि दलित कविता अपमानित पीढ़ियों की पीड़ा से उपजी कविता है और इसी वजह से उसमें न केवल समाज के एक अंश के प्रति बल्कि संपूर्ण समाज व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह का लावा प्रस्फुटित है। हमारे समाज की व्यवस्था जिसमें मनुष्य की स्थिति पशु से भी बदतर है और हमारी ऐसी व्यवस्था में कहा जाता है कि सवर्ण के भोजन को सूअर सूँघ ले तो अपवित्र हो जाता है, पर शूद्र तो मात्र उस भोजन को देख ले तो भी भोजन अपवित्र हो जाता है इस हद की घृणा हमारी व्यवस्था का हिस्सा बन बैठी है। इस व्यवस्था के तहत शूद्रों को पढ़ने–लिखने पर पाबंदी और किसी धार्मिक क्रिया–कर्म पर भी पाबंदी रही है। उसके पास कोई हक अधिकार नहीं केवल सेवा करना ही उसका कर्त्तव्य है और वह भी किसी प्रकार की अपेक्षा के बगैर। इस व्यवस्था और उससे उपजी पीड़ा दलित कविता का विषय बनी है।

दलित साहित्य के प्रतिष्ठित रचनाकार मोहनदास नैमिशराय का कहना

[1] शोध–छात्रा नेट (जे0आर0एफ0), हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

है–''दलित कविता एक सामाजिक आन्दोलन का सामाजिक प्रतिफलन है। अन्य काव्यधाराओं और साहित्यिक परम्पराओं की अपेक्षा उसका सीधा सम्बन्ध जीवन की जमीन से है।''[2]

दलित कविताओं में दलित वर्ग के प्रति शताब्दियों से बरती जा रही भेद–भाव की नीति, अपने विकास के लिए छटपटाहट और उसके मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाली व्यवस्था के प्रति आक्रोश दिखाई देता है। यह आक्रोश पीड़ा से उत्पन्न हुआ है। दलितों ने जो पीड़ा भोगी है, यह भोगी हुई पीड़ा हर व्यवस्था के प्रति विद्रोह के रूप में फूट पड़ी है। धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियाँ इसका प्रथम निशाना हैं। यह पीड़ा जब प्रतिकार का स्वरूप लेती है, तो हर चीज को ध्वस्त करने की ही ठानती है।

हिन्दू दर्शन समस्त मानव की ही नहीं जीव मात्र की आत्मा को एक ही ब्रह्म का अंश मानता है, लेकिन दलितों के प्रति उसकी निर्ममता अमानवीय है। इस संदर्भ में ओम प्रकाश वाल्मीकि अपनी कविता 'शायद आप जानते हों' में लिखते हैं–

''तुम्हारे रचे शब्द
तुम्हें ही डसेंगे साँप बनकर
गंगा किनारे कोई वटवृक्ष ढूँढ लो,
कर लो भागवत का पाठ
आत्मतुष्टि के लिए
कहीं अकाल मृत्यु के बाद
भयभीत आत्मा
भटकते–भटकते
किसी कुत्ते या सूअर की मृत देह में
प्रवेश न कर जाए
या फिर पुनर्जन्म की लालसा में
किसी डोम या चूहड़े के घर
पैदा न हो जाए
चूहड़े या डोम की आत्मा
ब्रह्म का अंश क्यों नहीं है
मैं नहीं जानता
शायद आप जानते हों।''[3]

हिन्दू धर्म का भाग्यवाद अकर्मण्यता की तरफ ले जाता है। जो भाग्य में हो सो मिलता है इस भाग्यवाद की धोर निराशा ने दलितों की स्थिति को भाग्य के सुहावने नाम से उस पर थोप रखा है। इसको नकारते हुए डॉ. कँवल भारती लिखते हैं–

''अब यह नहीं हो सकता
कि तुम्हारे भाग्य और कर्म के जाल
हमें उलझाये रहें पीढ़ी–दर–पीढ़ी
और तुम हमारी लाशों पर
चढ़ते रहो विकास की सीढ़ियाँ
पीढ़ी –दर–पीढ़ी।''[4]

दलित कविता में आर्थिक विपन्नता से दलित समाज पर थोपे गये गंदे कामों के प्रति घृणा की भावना है। क्योंकि यही काम उसके जीवन के आधार बनाये गये हैं इस अन्याय का जिक्र दलित कविता में यत्र–तत्र सर्वत्र मिलता है। कालीचरण 'स्नेही' की कविता 'यह कैसा न्याय?' में व्यक्त इस वेदना को देखा जा सकता है–

''मेरी अधेड़ उम्र की माँ
हर रोज सबेरे–सबेरे
टोकरी और झाड़ू लेकर
निकल जाती है
सड़के बुहारने
पखाना साफ करने।
पूरी तल्लीनता से लग जाती है
सफाई के काम में
मिलती है दो रोटी इनाम में।[5]

जय प्रकाश कर्दम अपनी कविता में दलितों के मानवीय अधिकारों पर पाबन्दी से आहत होकर लिखते हैं–

''करोड़ों दलित वंचित हैं
सदियों से
बहुत सारे मानवाधिकारों से
सदियों से वे हमसे
गाली की भाषा में बोलते आ रहे हैं
यह उनकी संस्कृति है।
कितना विकट होता है
भूख के गणित से
जाति का व्याकरण।''[6]

दलित कविताएँ चेतना से परिपूर्ण और दलित अस्मिता के लिए संघर्ष को दर्शाती हैं। साधारण आदमी की व्यथा, विवशता और घुटन भरी जिन्दगी के अंधेरे में डॉ. एन.सिंह अपनी कविता 'अभी वक्त है' के माध्यम से एक चेतावनी देते हैं–

''आज नहीं तो कल जरूर
ये भूखी मानवता जागेगी
अपनी सारी मेहनत का
तुमसे जरूर हिसाब माँगेगी।
इन लपटों को अभी सँभालो, अभी वक्त है,
वरना इस ज्वाला को
कभी भी कोई रोक नहीं पाया है।''[7]

दलितों को अम्बेडकर और ज्योतिबा फुले के साहित्य से स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा मिली और उन्हें अपने दलित होने के मूलभूत कारणों

का एहसास हुआ। दलित कवियों ने अपने समाज को जगाया और सामाजिक परिवर्तन के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। डॉ. कर्दम अपनी कविता 'क्रान्ति का बिगुल बजा दो' के माध्यम से क्रान्ति का सन्देश देते हैं–

''मेरे शब्दों
केवल शब्द मत बने रहो,
अपने अर्थों में आ जाओ,
तीर तलवार में बदल जाओ।
धरती आसमान को हिला दो
अन्याय की दुनिया में
आग लगा दो
क्रान्ति का बिगुल बजा दो।''[8]

दलित कविता में जो आक्रोश और विरोध की भाषा है, उसकी अभिव्यंजना अर्थपूर्ण है। नकार, विरोध, प्रतिरोध, विद्रोह को व्यक्त करने के लिए दलित कवि जिस भाषा का प्रयोग करता है वह तेज बहाव की तरह है। डॉ. सी.बी. भारती की कविता 'चुनौती' में छिपी वेदना तड़पकर कहती है–

''हमारी भागीदारी के लिए
योग्यता की शर्त
कब तक फेंकोगे तुम
अपना मकड़जाल हम पर?
घबराओ नहीं
समय आ रहा है
जब हम भी बढ़ेंगे तुमसे
दौड़ने की शर्त
जीतेंगे बाजी
तोड़ेंगे तुम्हारा दर्प।
सुनो! परिवर्तन की सुगबुगाहट
हवा का रूख
पहचानो! पहचानो! पहचानो!!!!।''[9]

अब तक जिस दलित समाज को अँधेरे में रखकर उसका राजनीतिक और आर्थिक शोषण हो रहा था वे आज जागृत होने लगे हैं। 'क्रान्ति का बिगुल' कविता में डॉ. कुसुम वियोगी दलितों की राजनीतिक चेतना को उजागर करते हुए कहती हैं।

''अब तो प्रत्येक दलित
समझने लगा है,
स्पार्टकस बन
गुलामी का कारण
जिन्होंने
बजा दिया है बिगुल क्रान्ति का
तुम्हारी सामंती सोच के विरूद्ध।''[10]

दलित साहित्य की भाषा नकार और विरोध की भाषा है जिसमें युगों की यातनाएँ साकार हो उठी हैं। विमल थोरात इस सन्दर्भ में लिखती हैं,

''दलित कविता व्यक्तिगत अनुभवों से सम्पृक्त होने के साथ ही समूह–मन के अनुभवों की अनुभूति भी है।''11 क्रान्ति की भाषा सुन्दर नहीं होती इसीलिए कवि कहता है–

यह बताओ बलात्कार की शिकार
तुम्हारी माँ की भाषा कैसी होगी?''12

संक्षेप में कहा जा सकता है कि दलित कविता का मूल सत्य उनका भोगा हुआ यथार्थ है, अतः दलित कविता में दलित और आदिवासी जनजीवन का चित्रण सहज रूप से मिलता है। दलित कवियों की कविताओं में सफाई कामदारों के जीवन की उस दर्द पूर्ण क्षणों को प्रस्तुत किया गया है जो वे हर रोज नर्क के साथ जीता है। दलित कविता में घासफूस के घर, गंदी–सड़ी नालियाँ, झोपड़ों की जिंदगी, गंदगी से लथपथ बचपन, जवानी और बुढ़ापा सभी का हृदयद्रावक वर्णन मिलता है। इस जनजीवन के चित्रण में कवियों का आशय केवल समाज और व्यवस्था ने किस अमानवीय स्थिति में दलित जीवन को पहुँचा दिया है,यह दर्शाना मात्र न होकर इस घृणित जीवन से लोगों को सम्मानपूर्ण जीवन की ओर प्रशस्त करना प्रमुख है।

सन्दर्भ सूची

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ. 106–107
2. वही, पृ. 58
3. वही, पृ. 89–90
4. डॉ. कँवल भारती, तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती?, बोधिसत्व प्रकाशन, पृ. 65
5. डॉ. जयंती लाल माकडिया, हिन्दी कविता में दलित चेतना एक अनुशीलन, आकाश पब्लिशर्स,पृ. 246
6. साक्षान्त मस्के, परम्परागत वर्ण–व्यवस्था और दलित साहित्य,वाणी प्रकाशन, पृ. 54
7. डॉ. कालीचरण 'स्नेही' दलित विमर्श और हिन्दी दलित काव्य, न्यू रॉयल बुक कम्पनी, पृ. 43
8. साक्षान्त मस्के, परम्परागत वर्ण–व्यवस्था और दलित साहित्य,वाणी प्रकाशन, पृ. 37
9. हरिनारायण ठाकुर,दलित साहित्य का समाजशास्त्र,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ. 411
10. कुसुम वियोगी, टुकडे.–टुकडे. दंश, मुहिम प्रकाशन,पृ. 41
11. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र,वाणी प्रकाशन, पृ. 81
12. डॉ. कँवल भारती, तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती?,बोधिसत्व प्रकाशन,पृ .53